लेखा योग

११४. उत्तरदेयता एवं ईसाई दीनवत्सलता — जून २००५ / रा॰ज्येष्ठ १९२७; प्रकाशित - जुलाई २००६

इस अङ्क में

स्वैच्छिक दीनवत्सलता	१
स्वैच्छिक दान के प्रति उत्तरदेयता	२
टाइद (दशमांश)	२
टाइद के लिये उत्तरदेयता का प्रतिरूप	३
शब्दावली	४

धार्मिक दीनवत्सलता एवं उत्तरदेयता पर अपनी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए अब हम ईसाई दीनवत्सलता पर विचार करेंगे।

ईसाई-धर्म आज पूरे विश्व में पाया जाता है। विश्व में होने वाले अधिकांश लोकोपकारी प्रयासों के लिये धन की व्यवस्था ईसाई दीनवत्सलता द्वारा की जाती है। ईसाई दीनवत्सलता मुख्यतः दो प्रकार की होती हैः स्वैच्छिक दान तथा टाइद अथवा दशमांश।

स्वैच्छिक दीनवत्सलता

दीनवत्सलता के सम्बन्ध में ईसाइयों का दृष्टिकोण कुरिन्थियों[१] (यूनान-वासियों) को संत पौलुस (पॉल) द्वारा लिखे गये प्रथम पत्र से पता चलता है। इस पत्र में दीनवत्सलता करने की अपेक्षा दीनवत्सलता की भावना के महत्व पर बल दिया गया है। तथापि पवित्र बाइबल के नए संस्करणों में 'दीनवत्सलता' शब्द को प्रेम[२] के रूप में अनुवादित किया गया है।

पवित्र बाइबल में निर्धनों एवं अभावग्रस्त लोगों की देखभाल तथा उनकी मदद करने पर बल दिया गया हैः-

> तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, और तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझसे मिलने आए।'
>
> "तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया ? या प्यासा देखा और पानी पिलाया ? हमने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया ? या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए ? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझसे मिलने आए ? तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।"[३]

इसके अतिरिक्त, इस बात पर भी बल दिया गया कि दीनवत्सलता के बदले में किसी भी प्रकार के लौकिक प्रतिफल की आशा नहीं की जानी चाहियेः-

> तब उसने अपने नेवता देनेवाले से भी कहा, "जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाए। परन्तु जब तू भोज करे तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा।"[४]

---

[१] १ कॅरिन्थिअॅन्, १३, किंग जेम्स संस्करण, *होलि बाइबल*।

[२] १ कुरिन्थियों, १३, पवित्र बाइबल। Hindi – O.V. Re-edited

[३] मत्ती २५: ३४-४०, पृष्ठ ४३, पवित्र बाइबल।

[४] लूका १४: १२-१४, पृष्ठ १०९-११०, पवित्र बाइबल।

अतः प्रभु-यीशु प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत दान पर बल देते हैं। इसके अतिरिक्त, इस प्रकार के दान का प्रतिफल क़यामत के दिन[५] मिलेगा।

सामाजिक रूप से अपनी बराबरी के लोगों तथा निर्धन लोगों के आतिथ्य में अन्तर बताया गया है। सर्वप्रथम इस धरती पर उसका पुनर्भुगतान तब होगा जब आपके अतिथि बदले में आपको भी खाने के लिये आमन्त्रित करते हैं। इसलिये इस कार्य के लिये कोई दिव्य प्रतिफल नहीं मिलता है। दूसरी ओर जब आप किसी निर्धन को भोज के लिये आमन्त्रित करते हैं तो इसके बदले में आपको स्वर्ग में प्रतिफल मिलेगा।

स्वैच्छिक दान के प्रति उत्तरदेयता

प्रारम्भ में ईसाइयों द्वारा दिया जाने वाला दान प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत होता था। तथापि, जैसे-जैसे ईसाई धर्म विश्व में फैलता गया, वैसे-वैसे ईसाई दीनवत्सलता अधिक संस्थानिक होती गई। इससे दाता तथा लाभार्थी के बीच की दूरी और बढ़ती गई। इस दूरी के फलस्वरूप मध्यस्थ भी उत्पन्न हुए जो विश्व के एक छोर में धनराशि एकत्र करते हैं और उसको विश्व के दूसरे छोर में व्यय करते हैं।

जैसा कि पवित्र बाइबल में बताया गया है, ईसाइयों द्वारा दिये जाने वाले दान का प्रतिफल इस लोक में नहीं मिलता। दाता को उसका प्रतिफल क़यामत के दिन मिलेगा। इससे उत्तरदेयता की अपेक्षाएँ कम हो जाती है।

ईसाइयों द्वारा दिये जाने वाला दान कुछ समय से निरन्तर अधिक प्रयोजन मूलक होता जा रहा है। सम्भवतः प्रभु ईसा के उपदेश को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने की इच्छा के कारण ऐसा हुआ है। इसके फलस्वरूप धनराशि को और अधिक प्रभावशाली तथा उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से प्रयोग किये जाने की माँग बलवती हुई है।

स्वैच्छिक दीनवत्सलता के संदर्भ में ईसाई समाज में अभी हाल के वर्षों में उत्तरदेयता सम्बन्धी कोई महत्त्वपूर्ण चुनौती नहीं उठी है। अमरीकी टेलीविजन पर कुछ लोकप्रिय ईसाई प्रचारकों[६] द्वारा धनराशि के दुरुपयोग-सम्बन्धी आपत्तियाँ उठने के फलस्वरूप वर्ष १९७९ में अमरीका में *इवैन्जेलिकॅल काउन्सिल फॉर फाइनेंशियल अकाउण्टेबिलिटी* (ई·सी·एफ·ए·)[७] का गठन किया गया।

वर्तमान समय में ई·सी·एफ·ए· में लगभग १२०० सदस्य संगठन हैं जिनका संयुक्त वार्षिक आय १४ बिलियन डॉलर (६.४४ खरब रुपये[८]) है। ई·सी·एफ·ए· ने उत्तरदायित्वपूर्ण प्रबन्ध व्यवस्था के सात मानक तैयार किये हैं। यह अपने सदस्यों को इनके क्रियान्वयन में सहायता करता है और इस प्रकार से वे जनता का विश्वास अर्जित करते हैं। इसके अनुपालन न करने सम्बन्धी शिकायतों का भी यह संगठन उत्तर देता है।

टाइद (दशमांश)

टाइद (दशमांश, १० %) आदेशित दान का एक स्वरूप है जो कि केवल ईसाई दीनवत्सलता में पाया जाता है।

पवित्र बाइबल में टाइद[९] से सम्बन्धित कई प्रसंग मिलते हैं:-

> "और यह पत्थर, जिसका मैं ने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा : और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।"[१०]

> "फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसको

---

[५] ईसाई मतानुसार क़यामत के दिन सब मुर्दे जीवित हो जायेगें तथा ईश्वर उनका न्याय करेगें। इसके पश्चात् ईश्वरीय साम्राज्य आयेगा।

[६] अधिक नवीनतम विचार-विमर्श के लिये देखें:- "*जीसस् सीईओः* अमेरिका के सर्वाधिक सफल चर्च स्वयं को व्यवसाय स्वरूप में पेश कर रही है" *दि इकोनॉमिस्ट*, लंदन, पृष्ठ ५१, २४-दिसम्बर-२००५।

[७] www.ecfa.org

[८] १ खरब = १०० बिलियन = १०,००० करोड़

[९] ईश्वर या चर्च को अपनी आय का दसवाँ भाग देने की परम्परा। देखें, उत्पत्ति १४: २०, २८: २२, लैव्यव्यवस्था २७: १-३४, पवित्र बाइबिल।

[१०] उत्पति २८: २२, पृष्ठ ३५, पवित्र बाइबिल।

छुड़ाए।"[११]

टाइद (दशमांश) मुख्यतः चर्च के रख-रखाव तथा पादरियों के वेतन के भुगतान के लिये होता है। टाइद[१२] के एक बड़े भाग का प्रयोग विश्व के अन्य भागों में मिशन से सम्बन्धित कार्यों के लिये भी किया जाता है।

मेरियम-वेब्स्टर्स एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन्स्[१३] के अनुसार टाइद मूलतः एक यहूदी प्रथा थी जिसको ईसाई चर्चों द्वारा अपनाया गया था। ईसाई धर्म के धीरे धीरे फैलने के साथ यूरोप में भी टाइद अनिवार्य हो गई। आरंभ में यह छठी शताब्दी से ईसाई-धार्मिक[१४] विधान द्वारा लागू की गई। बाद में आठवीं शताब्दी से यह धर्मनिरपेक्ष[१५] विधान द्वारा लागू की गई। तथापि, पूर्वी धर्मनिष्ठ चर्च[१६] ने टाइद को कभी भी स्वीकार नहीं किया।

टाइद को फ्राँस की क्रांति (सन् १७८९ ईस्वी) के समय समाप्त कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त इटली, आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड जैसे अन्य देशों ने भी १९-२० वीं शताब्दी तक टाइद को समाप्त कर दिया। परन्तु पादरियों के रख-रखाव के लिये सरकारी राजस्व से अन्य प्रावधान किये गये।

कई यूरोपीय देशों में[१७] सरकार टाइद की उगाही एक अनिवार्य-कर के रूप में करती है। इसको चर्च-कर कहा जाता है। फिर इस राशि को विभिन्न मान्यता प्राप्त चर्चों में आबन्टित कर दिया जाता है। प्रायः चर्च-कर से एकत्रित राशि बहुत बड़ी होती है। वर्ष २००२[१८] में केवल जर्मनी में ही यह राशि लगभग € ८,५०० लियन (४.८५ खरब रुपये) थी।

भविष्यद्वक्ता मलाकी

[११] लैव्यव्यवस्था २७: ३०-३१, पृष्ठ १६०, पवित्र बाइबिल।

[१२] वर्तमान समय में चर्च सदस्यों द्वारा चर्च-कर या स्वैच्छिक दान के रूप में।

[१३] १९९९ संस्करण, पृष्ठ ११००

[१४] ecclesiastical

[१५] धार्मिक नियमों से भिन्न रीगल नियम।

[१६] ईस्टर्न और्थोडौक्स चर्च

[१७] जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क, स्विट्ज़रलैंड, आस्ट्रिया, फिनलैण्ड।

[१८] स्रोतः www.wikipedia.org अंतिम रूप सें एकत्रित आंकड़े, २६-दिसम्बर-२००५।

कुछ दशकों से इस संस्थान पर दबाव पड़ने लगा है और कई देशों[१९] ने अब इसको वैकल्पिक कर दिया है। यद्यपि इसे न देने पर ऐसे व्यक्ति को औपचारिक रूप से अपनी चर्च की सदस्यता का परित्याग करना होता है।

अमरीका में टाइद कभी भी संवैधानिक रूप से देय नहीं रहा है। तथापि *लैटर डे सेन्ट्स* और *सैवॅन्थ डे एॅडवैन्टिस्ट* सहित कुछ चर्चों के सदस्यों के लिये टाइद देना अनिवार्य है।

भारत के कुछ भागों में, विशेषकर दक्षिण में, कुछ चर्च सदस्य नियमित रूप से टाइद का भुगतान करते हैं।

टाइद के लिये उत्तरदेयता का प्रतिरूप

यदि हम टाइद की उगाही के लिये अपनाये गये तरीकों पर सावधानी पूर्वक विचार करें तो यह सरकारी-कर के समान प्रतीत होगा। जहाँ पर इसकी उगाही किसी सरकारी संस्थान के माध्यम से की जा रही है, जैसे कि यूरोप के कुछ भागों में होता है, वहाँ यह तथ्य विशेष रूप से सत्य लगता है। इसलिये उत्तरदेयता के सन्दर्भ में टाइद देने वालों की अपेक्षाएँ भी लगभग एक समान ही होती हैं: क्या टाइद का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया जा रहा है? क्या चर्च अपने समुदाय को पर्याप्त सेवा तथा उसका पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है? क्या मिशन का कार्य प्रभावशाली ढंग से किया जा रहा है?

टाइद को मूलतः अनिवार्य-कर के रूप में देखा जाता रहा है। इसलिये कभी-कभी कुछ सदस्य टाइद का पूरा भुगतान न करने वाले सदस्यों के प्रति रोष व्यक्त करते हैं।

बाइबल के पुराने धर्म नियम[२०] में दिया गया एक रोचक प्रसंग इस दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। इससे पता चलता है कि उत्तरदेयता टाइद देने वालों पर लागू होती थी न कि टाइद लेने वालों पर:-

"क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता

[१९] स्वीडन ने वर्ष २००० में अनिवार्य चर्च-कर को निरस्त करने से सम्बन्धी अधिनयिम पारित किया था। बाद में सरकार ने चर्चों की ओर से कर की वसूली जारी रखने का निर्णय लिया था जो कि करदाताओं द्वारा सामान्य कर के साथ दिया जाने वाला वैकल्पिक दान था।

[२०] ओल्ड टेस्टामैण्ट ऑफ *होली बाइबल*।

है? पर देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो, 'हम ने किस बात में तुझे लूटा है ?' दशमांश और उठाने की भेटों में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन् सारी जाति ऐसा करती है। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।"[२१]

फ्राँस और अमरीका[२२] जैसे कुछ पश्चिमों देशों में चर्च तथा राज्य-व्यवस्था आधिकारिक रूप से पृथक किये गये हैं। इन देशों में, विशेषकर अमरीका में, स्वैच्छिक-दान अथवा स्वैच्छिक-टाइद ही चर्च के लिये धनराशि का महत्वपूर्ण स्रोत है। कुछ जानकारों के अनुसार अमरीका में चर्च जाने वालों में से ७० प्रतिशत लोग टाइद देते हैं।

वर्तमान में टाइद के बारे में कुछ लोग मानते हैं कि प्रभु-यीशु के सलीब पर चढ़ने के साथ ही पुराना विधान समाप्त हो गया। इस लिये यीशु को तारक मानने वालों के लिये टाइद का नियम लागू नहीं होता। अन्य कुछ लोगों का मत है कि यद्यपि यह सत्य है परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि लोग टाइद देना ही बंद कर दें। इसका अर्थ है कि लोग अब १०% से अधिक टाइद भी चर्च को दे सकते हैं।

संदर्भ

१. *होलि बाइबल*, गुड-न्यूज संस्करण, आधुनिक आँग्ल संस्करण, बाइबिल सोसायटी ऑफ इंडिया, २०६ महात्मा गाँधी रोड, बेंगलोर।

२. *होलि बाइबल*, प्राधिकृत किंग जेम्स संस्करण, थॉमस नेलसन बाइबल, २००३।

३. पवित्र बाइबल, Hindi – O.V. Re-edited, बाइबिल सोसायटी ऑफ इंडिया, २०६ महात्मा गाँधी रोड, बेंगलोर।

४. *मेरियम वेब्स्टर्स एनजाइक्लोपिडया ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स्, मेरियम वेब्स्टर*, मेसाच्यूसेट्स, १९९९।

५. *ब्रिन्ग द फुल टाइद*, विलियम डी·वॉटले, जडसन प्रेस, पेन्नसिल्वानिया, १९९५।

६. *बियोन्ड टाइद्स एण्ड ऑफरिंग्स्*, माईकल एवं मिशैल टी· वेब, ऑन टाइम पब्लिशिंग, वाशिंगटन, १९९८।

७. *शुड द चर्च टीच टाइदिंग*, रसैल अर्ल कैली, राइटर्स क्लब प्रेस, नेब्रास्का, २०००।

८. *टाइदिंगः लो रेल्म् ओब्सोलीट् एण्ड डिफंक्ट*, मैथ्यू ई· नरामोर, टेकोवा पब्लिशिंग, नॉर्थ केरोलिना, २००४।

शब्दावली

आदेशित - मैनडेटेड्
भविष्यद्वक्ता - प्रोफेट्
दीनवत्सलता - चैरिटी
लौकिक - सांसारिक
लोकोपकार - फिलैन्थ्रोपी

उत्तरदायित्वपूर्ण प्रबन्ध व्यवस्था - रिसपॉन्सिबिल स्टीवर्डशिप

लेखा·योग हर माह प्रकाशित होता है। इसमें जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखा प्रणाली से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा की जाती है। यह विभिन्न जन-सेवी संस्थाओं, दातव्य संस्थाओं, व अङ्केक्षण प्रतिष्ठानों (ऑडिट फर्म) में लगभग २७०० व्यक्तियों को वितरित किया जाता है। लेखा·योग के प्रत्युत्पादन या पुनर्वितरण को अकाउण्टएड इण्डिया प्रोत्साहित करता है यदि ऐसा अव्यवसायिक उद्देश्य से किया जाए एवं इनके स्रोत को अभिस्वीकार किया जाए।

आँग्ल भाषा में लेखा·योग - This issue of Lekha·Yog is available in English as AccountAble.

लेखा·योग का वाभ-स्वरूप - लेखा·योग के सभी पुराने अङ्कों के आँग्ल संस्करण (AccountAble) हमारे वाभ-स्थल www.AccountAid.net पर उपलब्ध हैं। चयनित लेखा·योग अङ्कों का वाभस्वरूप भी वहीं उपलब्ध है।

अकाउण्टएड सम्पुटिका - जनसेवी संस्थाओं के लेखाङ्कन एवं इससे सम्बन्धित विषयों पर लघु जानकारी अकाउण्टएड सम्पुटिका में दी जाती है। इसे प्राप्त करने के लिए accountaid-subscribe@topica.com पर ई-प्रेष करें।

प्रत्याख्यान (डिसक्लेमर) - हम यह मानते हैं कि किसी भी धर्म की विभिन्न धार्मिक जटिलताओं का प्रमाणिक निर्वचन उस धर्म के आचार्य या उसमें विश्वास रखने वाले ही कर सकते हैं। यहाँ पर प्रस्तुत की गई विभिन्न धार्मिक प्रकियाओं का सिंहावलोकन केवल सामान्य जानकारी के लिए है और इसका प्रयोजन किसी भी मत का अनादर अथवा खण्डन करना नहीं है।

पत्राचार - आपके प्रश्नों और सुझावों का स्वागत है। हमारा पता है - अकाउण्टएड इण्डिया, ५५-ए, खण्ड सी, सिद्धार्थ विस्तार, नई दिल्ली - ११० ०१४; दूरभाष - ०११-२६३४ ३१२८, २६३४ ६१११; प्रतिरूप प्रेषिका - २६३४ ३८५२; ई-प्रेष - accountaid@vsnl.com

© AccountAid™ India विक्रम संवत् श्रावण २०६३; जूलाई २००६ ईस्वी।

---

[२१] मलाकी ३: ८-१०, पृष्ठ १११०, पवित्र बाइबल।

[२२] ब्रिटेन में एंग्लिकन पादरी अपना वेतन सरकारी-करों से प्राप्त हुए राशि में से लेते हैं।